बी.ए.–हिन्दी–प्रतिष्ठा–प्रथम वर्ष

छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की काव्यगत विशेषता

– डॉ॰ मुन्ना साह

छायावादी कवियों में पंत जी का विशेष स्थान है। सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि ऐसे ही नहीं कहे जाते हैं, प्रकृति के प्रति उनकी आस्था प्रगाढ़ है। उनकी रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन दृष्टिगत होता है। पंत सुकोमल भावनाओं के कवि भी कहे जाते हैं।

सुमित्रानंदन पंत की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

भाव पक्ष – पंत ने भाव सौंदर्य का बहुत सुंदर चित्रण किया है। उनकी काव्य कला ध्वन्यात्मकता और संगीतनात्मकता से निखर उठता है। वे भवों का केन्द्रीयकरण बहुत ही सहज रूप में करते हैं। वस्तुतः उनको भाव सौंदर्य के चित्रण में बहुत सफलता प्राप्त हुई है।

प्रकृति चित्रण – सुमित्रानंदन पंत मूलतः प्रकृति के कवि हैं। प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप हो या विहगों का कलरव, उनके चित्रण कर, वे हर्ष विभोर हो उठते हैं। उनकी पंक्तियाँ हैं –

"विहग, विहग
फिर चहक उठे ये पुन्ज–पुन्ज
चिर सुभग–सुभग।"

दूसरी ओर छाया को देख दया से विभूत हो जाते हैं।

"कहो कौन हो दमयन्ती सी
तुम तरू के नीचे सोई,

हाय! तुम्हे भी त्याग गया क्या

अलि, नल–सा निष्ठुर कोई?"

पंत प्रकृति के चितेरे हैं। वे पाठक और श्रोता दोनों को अपने काव्य सौंदर्य से सिक्त कर देते हैं।

कल्पना – पंत की कविताओं का प्रधान साधन कल्पना है। कविता में उपमा एवं रूपक की मधुर योजना हो या विविध प्राकृतिक चित्रों का अंकन सब कल्पना के द्वारा ही संभव हो पाया है।

सुख–दुःख का भाव – सुख–दुःख के भावों से पंत का हृदय भरा हुआ जान पड़ता है। वे लिखते हैं –

"जग जीवन में है सुख दुःख

सुख दुःख में ही जगजीवन।"

वेदना की महता पर वे लिखते हैं –

"वेदना के ही सुरीले हाथ से

है बना यह विश्व, इसका परमपद

वेदना ही है।"

भाषा – पंत जी की भाषा खड़ीबोली है। उनकी भाषा सरल है, उसमें चित्रमयता, ध्वन्यात्मकता, संगीतात्मकता और लाक्षणिकता की मात्रा विशेष रूप से दृष्टिगत होती है। भाषा में तत्सम शब्दों की योजना के बावजूद कोमलता एवं सरलता है।

वस्तुतः भाव एवं कला पक्ष की दृष्टि से पंत जी का स्थान छायावादी कवियों में अद्वितीय है।